पत्रिका

'मीरां-जीवण अर सिरजण' विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन, रचनाकारों ने रखे विचार

'मां मीरा ने मारवाड़ और मेवाड़ के यश को सूर्य की भांति किया प्रकाशमान'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मेड़तासिटी. यहां बस स्टैंड स्थित चारभुजा राजपूत छात्रावास में शनिवार को ''मीरा-जीवण अर सिरजण' पर विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस मौके पर वक्ताओं ने भक्त शिरोमणि मां मीरा के भक्ति जीवन चरित्र पर विचार रखते हुए उनके जीवन एवं सृजन पर नई दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता बताई। परिसंवाद में रचनाकार, इतिहासकार व शिक्षक शामिल हुए।

संगोष्ठी संयोजक डॉ. रामरतन लटियाल ने बताया कि छात्रावास सभागार में मां मीरा की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। चतुर्भुज शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष नरपतसिंह भानास ने स्वागत उद्बोधन दिया। इसके पश्चात बोलते हुए कवि आलोचक प्रोफेसर डॉ. अर्जुनदेव चारण ने कहा कि श्रीमद् भागवत गीता में भक्ति योग को ज्ञान एवं कर्म योग से बड़ा बताया है। क्योंकि इसमें आत्मा की प्रतिष्ठा प्रेम के रूप में होती है। मीरा ने अपने कर्म से सकल विश्व में प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की। उन्होंने कहा कि एक तरफ जहां मीराबाई ने मारवाड़ एवं मेवाड़ के यश को सूर्य की भांति प्रकाशमान किया है। वहीं उन्होंने समाज की कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के विरुद्ध लोक में जन चेतना जगाकर देश को एक नई दशा और दिशा प्रदान की। परिसंवाद में कवि आलोचक प्रोफेसर डॉ. सत्यनारायण ने कहा कि मां मीरा ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आज जब विश्व स्त्री विमर्श की बात कर रहा है, ऐसे में यह प्रश्न विचारणीय है कि आज से पांच सौ वर्ष पहले मीरा बाई नारी शक्ति के रूप में एक अनुपम उदाहरण है। निःसंदेह कृष्ण को अपना आराध्य मानकर अपना जीवन व्यतीत करने वाली मीरा विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है। जिनका राजस्थानी भाषा में लिखा भक्तिकाव्य विश्व में अद्वितीय है।

मेड़ता सिटी. परिसंवाद कार्यक्रम में बोलते हुए कवि आलोचक चारण।

पेश किए आलोचनात्मक शोध पत्र

राष्ट्रीय परिसंवाद के साहित्यिक सत्र प्रतिष्ठित कवि डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित एवं डॉ. जगदीश गिरी की अध्यक्षता में हुए जिसमें डॉ. रामरतन लटियाल ने मध्यकालीन काव्य परम्परा एवं मीरा तथा डॉ. रीना मेनारिया ने राजस्थानी लोक मानस में मीरा विषयक आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किए। वहीं, डॉ. सवाईसिंह महिया ने मीराबाई की भक्ति साधना एवं श्यामसुन्दर सिखवाल ने इतिहास के उज्ज्वल उजास में मीराबाई विषयक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस दौरान डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा कि मीराबाई के जीवन एवं सृजन पर नई दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। डॉ. गिरी ने कहा कि मध्यकालीन समय में देश में कई महिला संत एवं कवयित्रियां हुई है लेकिन किसी भी कवयित्री पर मीरा जैसा ना तो सामाजिक दबाव था और ना ही साहस।

'शास्त्रीय से लोक लोक साहित्य सदैव श्रेष्ठ और विशाल'

कार्यक्रम समापन पर कवि प्रो. चारण ने कहा कि शास्त्रीय से लोक साहित्य सदैव श्रेष्ठ और विशाल है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा के उदाहरण पेश कर मीराबाई की भक्ति साधना को रेखांकित किया। कवि डॉ. राजपुरोहित ने कहा कि मीरा एक पतिव्रता नारी थी। मीरा के नाम से लोगों ने पद लिखकर मेवाड़ राजवंश के विरुद्ध गलत धारणाएं फैला दी। परिसंवाद कार्यक्रम में इन्द्रसिंह राठौड़, डॉ. कालू खां देशवाली, भागीरथदान चारण, रामअवतार दाधीच, सीपी बिड़ला, उम्मेद सिंह मेड़तारोड़, सहायक अभियंता देवेन्द्र सिंह, चेतन कमेड़िया, नरेंद्र सिंह जसनगर, शोध छात्र किशन केडीसिंह सोडावास, सुरेन्द्र सिंह गेमलियावास, मनोज वर्मा सहित रचनाकार, शिक्षकों ने भी शोधपत्र प्रस्तुत रखे।